जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति का भारतीय राजनीति पर प्रभावः एक ऐतिहासिक अध्ययन

संगीता कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभग,
ल0 ना0 मि0 विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार

साारांशः–

जयप्रकाश नारायण का व्यक्तित्व एवं विचारधारा बहुआयामी रहा है। उन्होने देश तथा दुनिया को विभन्न रूपो सें प्रभावित किया। एक क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी के रूप में उन्होने उपनिवेशवाद तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष किया था। लोकतांत्रिक समाजवाद एवं समतामूलक समाज की स्थापना के लिए उन्होने अथक परिश्रम किया। स्वाधीन भारत में सत्ता की राजनीति के बदले उन्होने मूल्य की राजनीति का चयन किया। दलगत राजनीति सें मोहभंग होने के बाद उन्होने विनोबा भावे तथा सर्वोदय के चिंतन के यज्ञ मे अपने को सर्मीपत कर दिया। नक्सलवादी आंदोलन की चिंगारी पैदा होने पर उन्होने बिहार के विभिन्न गांव का भ्रमण किया तथा अंतम : मुजफ्फरपुर जिले के मुसहरी गॉव में समाजित आर्थिक निति कर विष्रमता की समस्या के समाधान के लिए उन्होने अंहिसक निति का प्रयोग किया। चंबल घाटी के दुर्दात अपराधियों के हृदय परिवार्त्तन के लिए उन्होने निर्णायक संघर्ष किया। 1970–71 के कालखण्ड में पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्वी पाकिस्तान के बीच बढ़ते हुए तनाव के दौरान भी उन्होने भारत के विभिन्न क्षेत्रो में दौरा किया तथा सक्रिय भूमिका का निर्वाहन किया। 1974 मे छात्र आंदोलन के दौरान जयप्रकाश नारायण की भूमिका ऐतिहासिक रही हैं छात्र आंदोलन, आपात्काल, जनता पार्टी का गठन तथा 1947 के कोलसभा के चुनाव में जयप्रकाश नारायण ने अपने जीवन संघर्ष के चरम उत्कर्ष कों प्रस्तुत किया। इतिहासकार डॉ0 माधव चौधरी ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की भूमिका चिंतन तथा व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षो का तर्कपूर्ण विष्लेषण प्रस्तुत किया है। उनका यह कथन समाचीन है कि जय प्रकाश नारायण के व्यक्तित्व तथा विचारधारा मे विचलन तथा उतार–चढ़ाव के दौर परिलक्षित होता है। प्रस्तुत शोध में वर्तामान संदर्भ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक चिंतनों का अनुशीलन भी किया गया है। जयप्रकाश नारायण के चिंतन की प्रासंगिकता का मूल्यांकन भी किया गया है। उनके जीवन तथा विचारधारा को टूटते–बिखरते सूत्रो की विवेचना ऐतिहासिक संदर्भ में किया गया है।

प्रस्तावनाः–

जयप्रकाश ने अपनी पुस्तक कारावास की कहानी में लिखा है, ''क्रांति करने की जो तीव्रता मेरे मन में थी, वह मुझे मार्क्सवाद की ओर विनोबा जी की प्रेम सें क्रांति की ओर खींच ले गई। विनोबा जी के आंदोलन में शामिल होने के पूर्व अपने साथ चर्चाएं कर मै आश्वस्त हो गया था कि उनका लक्ष्य सिर्फ जमीन बॉटना नही बल्कि मनुष्य व समाज का पूर्ण परिवर्त्तन करना हैं। जिसे मैने दोहरी क्रांति, मानवीय क्रांति के द्वारा सामाजिक क्रांति की संज्ञा दी थी'' उपयुक्त माहौल ने जयप्रकाष नारायण को बिकार के छात्र आंदोलन की दिशा में संपूर्ण क्रांति की ओर मोड़ने के लिए तत्पर किया। 5 जून 1975 को गॉधी मैदान में आयोजित एक सभा में जब सभी शामिल विपक्षी दल के नेताओं एंव जनसमूहो नें संपूर्ण क्रांति से सहमति जाहिर की तो उन्होने संपूर्ण क्रांति को व्यापक रूप सें संपूर्ण का लक्ष्य मान लिया एंव समस्त बिहार बोल उठा ''संपूर्ण क्रांति का नारा है, भावी इतिहास हमारा है''।

संपूर्ण क्रांति का गहरा असर भारतीय राजनीति पर दिखाई परड़ता है। गौरतलब है कि संपूर्ण क्रांति का ही प्रभाव था कि 1977 में अंततः वर्षो से चली आ रही केन्द्र में कांग्रेस की सत्ता पटरी से उलट गयी। संपूर्ण क्रांति का ही प्रभाव था कि देश के कई प्रमुख राज्यों में क्रांग्रेस पार्टी का ही प्रभाव था कि देश के कई प्रमुख राज्यों में क्रांग्रेस पार्टी को विपक्ष में बैठने के लिए बाध्य होना पड़ा। संपूर्ण क्रांति का ही प्रभाव था कि 1977 के चुनाव में श्रीमती इंदिरा गांधी तथा संजय गांधी को भी पराजय का अनुभव हुआ। परंतु जयप्रकाश नारायण नें जिस लगन तथा इमानदारी सें 1974 सें 1977 के कालखंड मे सपूर्ण क्रांति का संखनाद किया था उसका प्रभाव अधिक अधिक दिनो तक स्थायी नही हो सका। जाहिर है कि विभन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने परस्पर स्वार्थ सत्ता की राजनीति तथा संकीर्ण मतवाद के कारण संपूर्ण क्रांति के व्यापक वैचारिक आयाम को विफल कर दियां जयप्रकाश नारयण केवल सत्ता की राजनीति के लिए संघर्ष नही किया। जयप्रकाश नारायण व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्त्तन चाहते थें। बहरहाल संपूर्ण क्रांति तथा भारत की राजनीति के बीच मौजूद संबंधो के विश्लेषण के लिए ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों पर नजर डालना उचित प्रतीक होता है।

स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान बिहार मे तथा देश के अन्य भागो में भी लोकनायक जयप्रकाश नारयण ने अनुभव किया कि भारत में साम्यवादी दलों के द्वारा महात्मा गांधी का विरोध हो रहा है। साथ ही मार्क्सवादी के सिद्धांत पर अमल नही हो रहा है। सत्त की राजनीति तथा निहित स्वार्थ के कारण साम्यवादी नेतृत्व दिशाहीन है। अतः आंरभिक जीवन में मार्क्सवाद से प्रभावित होने के बावजूद उन्होने बिहार राज्य के अंतर्गत मार्क्सवाद के प्रति कोई दिलचस्पी नही दिखाई। इसके विपरीत उनके मन में समाजवाद लोकतंत्र सामाजिक न्याय की व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा राष्टवाद के प्रति अधिक आकर्षण दिखाई देता है। परंतु लोकनायक जयप्रकाश नारयण का लगातार साम्यवादी दलों से अलगाव की स्थिति मौजूद रही। अक्टूबर 1929 में भारत आने के पश्चात जयप्रकाश नारायण ने पाया कि भारतीय साम्यवादी कही भी राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय नही थे। नारायण के शब्दो में ''भारती साम्यवादी दल के साथ मेरा मतभेद सोवियत रूस से होने वाले मेरे वैचारिक अलगाव के आरंभ का संकेत था। मार्क्सवाद तथा रूसी साम्यवादी में व्याप्त विरोधाभास के कारण नारायण नें जनवरी 1930 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य ग्रहण कीं महात्मा गांधी तथा जवाहरलाल नेहरू दोनो ही नारायण से अत्यंत प्रभावित हुए। पं0 नेहरू ने उन्हे कांग्रेस दल श्रम–शोध विभाग का निर्देशक नियुक्त किया।

एक समाजवादी मनीषी के रूप में जयप्रकाश नारायण की शक्ति बात में थी उन्हे राजनीति के आर्थिक आधारो का स्पष्ट ज्ञान था। महात्मागांधी उन्हे समाजवाद का सबसे बड़ा भारतीय विद्वान मानते थे। ऐसा प्रतीत होता हे कि उन पर ब्रिटेन तथा अमेरिका के समाजवादीन विचारो का गहरा प्रभाव पड़ा था। वे समाजवाद को समाजिक– आर्थिक पुनर्निर्माण का एक संपूर्ण सिद्धात मानते थें उनके अनुसार यह वैयाक्तिक आचारनीति के सिद्धांत सें भी बहुत बड़ी चीज थीं उन्होने मनुष्य की जैविक असमानता के सिंद्धात का खण्डन किया।

जयप्रकाश नारायण के भाषणो में एक संपूर्ण क्रांति की बहुत व्यापक व्याख्या हुई है। उनके अनुसार ''यहा संघर्ष केवल सीमित उद्देश्यों के लिए नही हो रहा है उनके उद्देश्य तों बहुत दूरगामी है। भारतीय लोकतंत्र को वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाना जनता का सच्चा राज कायम करना समाज से अन्याय तथा शोषण आदि का अंत करना, एक नैतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रांति करना, नया बिहार बनाना और अंतर्तागत्वा नया भारत बनाना। ''इस व्याख्या में संघर्ष को किसी भी दिशा में कितनी भी देर तक आगे बढ़ाने की गुंजाइश थी। बिहार आंदोलन में क्रातिकारी संभावनाएँ उतनी ही थी जितनी वे उस समय बिहार में बसें भारतीय समाज में थी। परंतु किसी भी आंदोलन का तात्कालिन कार्यक्रम समय और परिस्थिति की सीमा में बंधा होता है। बिहार में भी जयप्रकाश नारायण के आह्न पर स्थापित जनता सरकारों के लिए जों कार्यक्रम तय किया गया था वह आंदोलन में शामिल लोगों से एक आदर्शवादी मूल्यमान की मांग करता था। यह कार्यक्रम इस प्रकार था जनता सरकार को समाज मे फैली हर अनीति और अन्याय के लिए संघर्ष करना था। उदाहरण के लिए सीलिंग तथा भूमि के प्रगतिशील कानूनों पर अमल अनुचित बेदखली पर रोक, भूमिहीनों के लिए बासगीत और खेती लायक भूमि का प्रबंध खेती की वैज्ञानिक व्यवस्था मजदूरी को उचित मजदूरी, घर पर उधोग, मुनाफाखोरी और सूदखोरी पर नियंत्रण, गांव के लिए आवश्यक अनाज का गांव मे संग्रह और उसकी उचित मूल्य पर बिक्री हर बच्चे–बच्ची को उत्पादन शिक्षा, बीमार का इलाज, झगड़ो का आपसी निपटारा, छुआछुत, तिलक, दहेज उंच–नीच के भेदभाव का अंत, आदिवासी, हरिजन, मूसलमान, स्त्री के साथ समान और सम्मानपूर्ण व्यवहार आदि। दिसंबर के बाद संगठन को गाँव स्तर पर ले जाने और समितियों तथा जनता सरकार आदि की इकाइयां गठित करने का काम हाथ में ले लिया गया था। लेकिन इकाइयां सधन रूप से उन्ही प्रखंडो में गठित हो पाई जहां युवा या जनसंघर्ष समितियाँ। किसी प्रचार आदर्श से जुड़े लोगो के नेतृत्व मे काम कर रही थी। जनता सरकारों या संघर्ष समितियों के लिए जों कार्यक्रम तय किया गया था। उसका एक बहुत छोटे अंश पर ही अमल होना शुरू हो सका। क्योकि बिहार में उस समय की परिस्थितियां अभी इतनी क्रांतिकारी नही बनी थी कि यह कार्यक्रम अमल में लाया जा पाता। परंतु यह आंदालन बिहार के समाज को इस दिशा मे निरंतर आगे बढ़ा रहा था। अपनी नियति पर पहुँचकर आंदोलन उन कारणों से अवरूद्ध हो गया था जों उसके नियंत्रण से बाहर थे।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण के जीवन का दूसरा कालखंड स्वाधीन भारत में आरंभ होता है। 15 अगस्त 1947 को भारत में स्वतंत्रता का सुर्योदय हुआ स्वाधीनता से पूर्व जयप्रकाश नारायण, पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रगतिशील विचारों से प्रभावित थें। उनके लाकतांत्रिक समाजवाद के प्रति जयप्रकाश नारायण के मन में गहरी निष्ठा थी परंतु स्वाधीनता के बाद पंडित नेहरू की कार्य संस्कृति, कार्य योजना तथा राजनीतिक रणनीतियों को देखकर जयप्रकाश नारायण का मन क्षुब्ध हो उठा। वे पृथ्वी के पुत्र थें। उन्होने बार–बार स्पष्ट किया कि देश में ईमानदारी के साथ कल्याणकारी राज्य की स्थापना की जानी चाहिएं उनके अनुसार केवल दिखावे के लिए स्वाधीन भारत में कल्याणकारी राज्य का उपयोग हों रहा है। फलतः पंडित नेहरू के साथ उनका मतभेद गहरा होता गया। बिहार उनका कर्मक्षेत्र था। अतः उन्होने ईमानदारी के साथ समाजवादी चिंतकों से संपर्क किया एवं राजनीति को नई दिशा देने का प्रयत्न कियां उनका विश्वास मूल्य की राजनीति में था। वे भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था चाहते थे। युवा पीढ़ी में रचनात्मक ऊर्जा तथा संघर्ष की उष्मा को उन्होने लगातार एक नया आधार प्रदान करने का प्रयास किया। परंतु चुनाव की राजनीतिक के दाव–पंच में जयप्रकाश नारायण विफल रहे। 1957 के चुनाव के बाद दलगत राजनीति से उनका मोह भंग हो गया।वे विभिन्न प्रकार के वैचारिक आयामों से जुड़े हुए थे।

संपूर्ण क्राति की जड़े जयप्रकाश नारायण के लगभग आधे शताब्दी लम्बे राजनीतिक एंव सामाजिक जीवन में विभिन्न योजनाओं कार्यक्रमों तथा घोषणा पत्रो में पाया जा सकती है। 1953 में जे0 पी0 जवाहरलाल नेहरू बर्ता के समय उनके द्वारा निर्मित चौदह सुत्री कार्यक्रम में भी संपूर्ण क्रांति से संबंधित मुख्य विचारों के बीच पाए जा सकते है। सपूर्ण क्रांति के विभिन्न पहलुओ मे निहित मुद्दों, मांगो पद्धतियो तथा तकनीकों का हम विश्लेषण एंव अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर कर सकते है।

आर्थिक क्रांतिः–

- आर्थिक–सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त अनुपातहीन विषमता को कम करना स्पष्ट रूप से अत्यावश्यक कार्य है।
- पूर्ण रोजगार का विश्वास दिलाना तथा आवश्यकता पर आधारित पारिश्रमिक के प्रावधान के साथ–साथ मँहगाई पर रोक लगाना आदि महत्वपूर्ण मुद्दो पर शीघ्र समाधान ढूंढना।
- उधोगो में स्वशासन को बढ़ावा देने की आवश्यकता।
- समाज के सबसे निचले तबके के हितों को ध्यान में रखकर योजना बनाने की आवश्यकतां क्षेत्रीय, प्रखंड तथा ग्राम–स्तर पर योजना निर्माण कक्ष की स्थापना करना।
- कृषि तथा औधौगिक वस्तुओ के मूल्यो में संतुलन स्थापित करने का लक्ष्य स्थापित करना।
- एक वृहत् पैमाने पर एवं एकीकृत ग्रामीण औधोगिक योजना का निर्माण कर उस बढावा देने। यह रोजगार तथा योग्यता के बीच संतुलन स्थापना पर आधारित होना चाहिए। जहां तक संभव हो सके विकासोन्मुखी कार्यो में स्थानीय संसाधनों का ही प्रयोग होना चाहिए
- घरेलू खपत के लिए उपभोक्ता सामग्रियों के निर्माण का कार्य छोटे ग्राम उधेगो के हवाले कर देना चाहिए।
- कृषि का विकास तथा आधुनिकीकरण अत्यावश्य है। नारायण भूमि के साभूहिक स्वामित्व के साम्यवादी विचार के पक्ष में नही थें

- पूंजी– निर्माण हेतु बचत को प्रोत्साहन देना आवश्यक है।
- सामाजिक स्वामित्व के सिद्धांत को बड़े औधोगिक सस्थापनो पर लागू करना। कालांतर में वहॉ कार्यरत श्रमिक अपने तथा उपयोक्ताओं एवं समुदाय की वृहत् हितो की रक्षा हेतु न्यासधारी के समान कार्य करने लगेंगे।
- बड़े उधोग विशेष नियंत्रणो के साथ पूंजीवादी प्रारूप पर आधारित होंगे परंतु सार्वजनिक निगम प्रतिरूप ही अधिक प्रचलित होगा।

सामाजिक क्रांति

- न्याय विरूद्ध एवं विवेकाशून्य प्रथाओं, अभिसमयों, समझौतों तथा प्रचलनों आदि जों मनुष्य के कद कों छोटा बनाते है, समाज में बने रहने का कोई ओचित्य नही हैं
- अंतरजातीय विवाहों को प्रोत्साहन देना चाहिए। जाति आर्थिक उन्नति के रास्ते में एक अत्यंत बड़ा अवरोधक है व्यवसायिक अनमनीयता तथा सामाजिक स्तर निर्माण पर आधारित है। यह अनैतिक व्यवस्था भी है क्योंकि यह सामाजिक रूप से निचले तबके के लोगो के माथे पर अपमान का बोझा लाद देता है। नारयण के अनुसार समाज में सिर्फ एक ही जाति होनी चाहिए–मानवजाति, नारायण के शब्दों मे ''

राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्रांति

- चुनाव हेतु उम्मीदवारों का चयन केन्द्रीय तथा राज्य संसदीय समितियों द्वारा नही किया जाना चाहिए। उम्मीदवारों को जन–समितियो द्वारा चुना जाना चाहिए। जयप्रकाष नारायण के शब्दो में ''मै अपनी आशाओ को जनता की समितियों पर केन्द्रित कर रहा हूँ। मैने यह विचार रूसी अथवा चीनी लोगो से लिया है।''
- जमीन की सूची व्यवस्था तथा बहुमत प्रथा को मिलाकर एक प्रयोग किया जा सकता है। दल–बदल के विरोध में एक व्यापक कानून होना चाहिए। दल–बदल भारतीय राजनीतिक दलों का एक कैन्सर है तथा विधयकों को सिंद्धातविहिन दल–बदल करने मे कोई हिचक नही है।
- किसी भी व्यक्ति कों राजनीतिक पद पर दो बार से अधिक आसीन होने की अनुमति नही होनी चाहिए।
- विधायिका, सरकार, विष्वविधलयों तथा निजी क्षेत्रो में उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों को अपनी संपति का ब्यौरा समय–समय पर देते रहना चाहिए।
- वैसे विधायक जों अपने चुनाव क्षेत्र में अधिकाशस मतदाताओं के विश्वास कों पूर्णतः खो चुके है, उन्हे वापस बुलाने का प्रवधान होना चाहिए। उनके शब्दों में, ''लोकतंत्र में जनता के पास ऐसा अधिकार होता है जिसके द्वारा वह निर्वाचक सरकार से इस्तीफा मांग सके, अगर वह भ्रष्ट हो गयी हो तथा शासन कार्य ठीक सें नही चला रही हो। अगर ऐसे विधयिका हो जो इस प्रकार की सरकार कों समर्थन दे रही हो तो उसे भी चले जाना चाहिए ताकि जनता अच्छे प्रतिनिधियों को चुन सके''।
- सरकारी प्राक्रिया, मुद्दे मांगो तथा नीतियों के निर्धारण में वाद–विवाद तथा विमर्श पर आधारित होनी चाहिए। सामान्य उन्मुखीकरण सर्वसम्मति के विकास की ओर होना चाहिए। केवल बहुमत द्वारा समस्योओं के समाधान के पक्ष में नारायण नही थे।

शैक्षणिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक क्रांति

- शैक्षणिक योजनाओं का निर्माण आर्थिक योजनाओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर किया जाना चाहिए। सर्वव्यापी प्राथमिक तथा वयस्क शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए।
- नारायण के शब्दो में ''विश्वविधलयो इन दिनों धोर पक्षपात तथा भ्रष्टाचार से ग्रस्त है तथा अपने निहित कार्यो कों नही कर रहे है। विश्वविधलयों में प्रतिभाओं की कमी नही है। परंतु ये प्रतिभाँए इन संस्थाओं में व्याप्त भय एंव पक्षपात के वातावरण में दब कर रह जाती है। अतः विश्वविधालयों को पठन–पाठन, प्रशिक्षण एवं शोध के केन्द्र के रूप में रहना चाहिए तथा विकास एंव राष्ट्र–निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए। केवल बौद्धिक दृष्टि सें विलक्षण युवाओं कों ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जाना चाहिए।
- हिंसा के प्रति विरक्ति की भावना विकासित करनी चाहिए।
- विज्ञान के मानवीकरण के प्रयास होने चाहिए।
- प्रेस, अच्छी, भवना, पारस्परिकता, दूसरों के लिए आदर, विशाल–हृदयता तथा कोप पर विजय को प्रोत्साहन देकर संपूर्ण सामुदायिक जागरूकता उत्पन्न करनी चाहिए।

जयप्रकाश नारायण का मानवतावाद एक विवाद रहित विषय है। उनके मानवतावादी विचारों तथा पद्धतियों ने चंबल घाटी के कई भयानक दस्युओं को भी उनके सामने हथियार डालने पर विवश कर दिया। साम्राज्यवादी राजनीतिक आधिपत्य तथा सामन्तशाही से जनता को मुक्ति दिलाने की दिशा में समाजवादी विचारधारा कों उन्मुख कराने का उनका प्रयास सराहनीय है। उनका राजनीति का त्याग कर ''जीवनदायिनी के रूप में नई भूमिका निभाने का अपना अलग महत्व था वास्वतव में उनका नव–समाजवाद जों गांधीजी तथा विनोबा भावे के जन–सेवा के तरीकों का मिश्रण था, न सिर्फ जनता के सामाजिक तथा आर्थिक उत्थान का दर्शन बल्कि भारतीयों के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में एक ईमनदार प्रयास था। उनके जीवन का ''संपूर्ण क्रांति' काल (1974–1979) उनके व्यक्तित्व की विशालता एंव करिश्माई शक्ति को प्रदर्शित करता हैं आर्थिक पुनर्रचना तथा केन्द्रीय सत्ता पर से कांग्रेस के एकाधिकार को समाप्त करने में युवा शक्ति का प्रयोग करके उन्होने अपनी विशाल संगठनात्मक तथा संरचनात्मक शक्ति का प्रदर्शन किया।

वास्तव में वे गांधीजी के बाद सबसे बड़े जन–नेता थे। एक सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक विचारक के रूप में जयप्रकाश नारायण सदा समाज विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किए रहेंगे।

जयप्रकाश नारायण ने समाजावादी मूल्यों तथा पुनर्निर्माण योजना के प्रति अपनी गहरी वचनवद्धता के साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सामाज्यवादी शक्तियों के साथ सहयोग तथा समझौता वादी नीतियों का खुलासा किया। उनके विचार सें कांग्रेस कों और उम्र आमूल परिर्वतनवादी कार्यक्रमों का अनुसरण करना चाहिएं उनके शब्दो में ''कौग्रेस का वर्त्तमान कार्यक्रम तथा उसके उद्देश्यों की घोषणाएं उसे आम जनता का प्रतिनिधत्व करने वाला चरित्र प्रदान नही करती है। ''उनके अनुसार इसके उद्देश्यों में कम सें कम निम्नलिखित कार्यक्रमों कों सम्मिलित किया जाना आवश्यक है।

- पूर्ण स्वराज्य अर्थात ब्रिटिश सामाज्यवादी से पूरी तरह से संबंध विच्छेद।
- सभी राजनीतिक तथा आर्थिक, शक्तियों उत्पादक वर्ग (जिनमे मानसिक कार्य करने वाले सम्मिलित है) को दे दी जाए।
- सभी आधारभूत तथा बड़े उधोगो, बैको खानो तथा साथ बागानो आदि का राष्ट्रीकरण हो।
- जमींदारी प्रथा को उसके प्रत्येक रूप में समाप्त कर दियाजाए।
- भूमि उस पर हल चलाने वाले कृषक को दे दी जाए।
- कृषकों तथा श्रमिको के सभी ऋण माफ कर दिए जाए।

जयप्रकाश नारायण के शब्दो में समाजवाद को उत्पादन के साधनों तथा कारकों के समाजीकरण द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। आम जनता के आर्थिक शोषण के क्रुर तरीको कों सिंर्फ इस प्रकार समाप्त किया जा सकता है। नारायण ने 1931 के कराची कांग्रेस के मौलिक अधिकारो संबंधि प्रस्तावों की क्रमियों की भी आलोचना की। वे भूमिकर उधोग के राष्ट्रीयकरण तथा खर्च में कटौती के प्रश्नो पर अडिग थें। उनके अनुसार भारत का मौलिक सामाजिक तथा आर्थिक कार्य जनता के शोषण को समाप्त करना है और यह जब संभंव है तब वे अपने आर्थिक तथा राजनीतिक भविष्य का निर्माण स्वंय करेगें। इसके लिए राष्ट्रवादियों तथा प्रगतिशील समाजवादियों के बीच सामन्जस्य स्थापित करना आवश्यक है। 1934 में नारायण को यह पूर्ण विश्वास हो गया कि भारत की स्वतत्रंता समाज्यवाद के ही मार्ग पर चलकर प्राप्त की जा सकती है।

जनवरी 1936 मे महाचिव के रूप में जयप्रकाश नारायण के कांग्रेस समाजवादी दल तथा साम्यवादियों के एक संयुक्त मोर्चा बनाने की बात सामने रखी। दल ने इसे मान लिया तथा यह तय किया गया कि वे मिलकर मजदुर संघ आंदोलन चलाएगें। 1938 के आते–आते भारतीय साम्यवादी दल का दबदबा शक्तिशाली अखिल भारतीय मजदूर संघ सम्मेलन पर स्थापित हो चुका था और अब वे कांग्रेस सममाजवादी दल पर अपना नियंत्रण स्थापित करने की दिशा मे अग्रसर थे। मार्च 1940 में कांग्रस समाजवादी दल ने सभी साम्यवादियों को दल से निकालने का निर्णय लिया।

1946 मे जयप्रकाश नारायण को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बनाये जाने के प्रस्ताव को कांग्रेस कार्य समिति में मौजूद शक्तिशाली प्रतिक्रियावादी तत्वों ने नामंजूर कर दिया तथा साथ ही कांग्रेस के अंदर के सभी राजनीतिक दलो को अवैधानिक घोषित कर दिया। नारायण के पास कांग्रेस छोड़ने के अतिरिक्त कोई विकल्प नही था। अतः 1948 में उन्होने कांग्रेस से संबंध विच्छेद कर लिया। 1952 के प्रथाम राष्ट्रीय आम चुनाव मे पं0 नेहरू के नेतृत्व मे भरतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नें लोकसभा में भारी बहुमत प्राप्त किया। समाजवादी दल ने साम्यवादियों के बाद तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस हार के पश्चात नारायण ने आचार्य जे0 बी0 कृपलानी के ''किसान मजदूर प्रजा दल'' के साथ समाजवादी दल का विलय कर ''प्रजा समाजवादी दल'' का निर्माण किया।

जयप्रकश नारायण के राजनीतिक पिचारो के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनके वैचारिक यात्रा के अनेक पड़ाव रहे है। उसमे गतिशीलता के तत्व विधमान है। जयप्रकाश नारायण कभी एक विचार पर दृढ़ नही रहे। छात्र अवस्था में देश भक्ति की भावना तथा राष्ट्रवाद ने प्रभावित किया। अमेरिका के प्रवास के दौरान वे कार्ल मार्क्स के विचारो से अनुप्राणित हुए। अमेरिका से लौटने के बाद समाजवाद ने उन्हे आकर्षित किया। स्वाधीनता के बाद प्रजा समाजवादी पार्टी का संगठन किया। इन सारे प्रयोगो के विफल होने के बाद वे सर्वोदय क चिंतन सें सम्मोहित हुए। विनोबा भावे ने उन्हे प्रभावित किया। गरीब किसान महदूरों की हक के लड़ाई के लिए उन्होने बिहार में भू–दान आंदोलन को नई दिशा देने का प्रयास किया। यह आंदोलन हिंसा रहित था। यह आंदोलन हृदय परिवर्त्तन से जुड़ा हुआ था। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण के जुड़े जाने के बाद बिहार में भू–दान आंदोलन को एक सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ

अप्रैल 1953 में बोध गया में आयोजित सर्वोदय सम्मेलन मे जयप्रकाश नारायण नें राजनीति का त्याग का गंधीवादी संत विनोबा भावे को स्वंय की जीवनदानी के रूप में समर्पित कर दिया। उन्हे इस बात का विश्वास हो गया कि कानून में हृदयों को जोड़ने की शक्ति नही है। सच्ची स्वंतत्रता केवल राज्य विहीन समाज में ही पूर्ण रूप से प्राप्त की जा सकती है। सामाजिक क्रांति के संदर्भ में राज्य की उपयोगिता संबंधित अपनी पूर्व विचारधारा के विपरीत वे इस निष्कर्ष पर पहुचे चुके थे कि लोकतांत्रिक समाजवादी, साम्यवादी तथा लोक–कल्याणकारी राज्य के समर्थक सभी राज्यवादी है जो राज्य कों सामाजिक परिवर्त्तन का एक माध्यम मानते है तथा राज्य के कार्यो के विस्तार लगे रहते है। वे राज्य को प्रसिद्ध अंग्रेज दार्शनिक टॉम्स हॉब्स के लेवायथॉ नामक राक्षस के समान पाते है जिसने जनता की स्वतंत्रता का हरण कर लिया है। उन्होने राज्य के समाजवाद के विकल्प के रू॰ के लोक समाजवाद को प्रस्तुत किया। इस प्रकार शंक्ति तथा राजनीतिक दल दोनो ही लोक समाजवाद के आगमन की स्थिति में अर्थहीन तथा अप्रासंगिक हो जाएंगे।

सर्वोदय महात्मा गांधी द्वारा स्थापित विकेन्द्रकारण तथा ग्राम स्वराज्य पर आधारित राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का नियोजन था। गांधीजी की मृत्यु के पश्चात आचार्य विनोबा भबे के नेतृत्व में उनके कुछ अनुयायों ने इसे जीवित रखा। अपने कुशल नेतृत्व तथा सर्वोदय की योजनाओं तथा विचारों के प्रचार–प्रसार में एक नई ऊर्जा भरने के कारण इस आंदोलन में विनोबा भावे के बाद जयप्रकाश नारायण का नाम सबसे महत्वपूर्ण हो गया।

जय प्रकाश नारायण समाज के वर्तमान स्वरूप मे बदलाव लाने के प्रबल समर्थक थे। उनके सपनो का समाज कोई जटिल तथा ऐसा समाज नही था जिसका उपरी भाग नीचे की अपेक्षा अधिक भारी हों अर्थात अमीरो का बोझ गरीबो के कंधे पर हो। यह ऐसा समाज भी

नही था जो नौकरशाहों व्यवस्थापको तकनीकों विशेषज्ञों तथा राज्यवादियों का स्वर्ग हों। साथ ही साथ यह ऐसा समाज भी नही था जो खोखले रूढ़िवादी विचारो पर खड़ा हो। दरअसल नारायण एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जो स्वशासन स्वव्यवस्थापन आपसी सहयोग तथा स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे की भावना पर आधारित हो।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार एक राज्य विहीन तथा वर्ग विहीन सर्वोदय समाज, जिसमे आत्म–निर्भर तथा आत्म संयंमित सदस्य वास करते हो की स्थापना गांधीवादी अंहिसात्मक समाजिक क्रांति द्वारा होगी। इस प्रकार की क्रांति में बल का त्याग तथा प्रबोधन की तकनीकी का व्यवहार मे लाया जाता है। उनके शब्दो में ''संसार में इस प्रकार का प्रयोग अब तक नही किया गया अतः इसकी पूरी संभवना है कि इसे शंका की दृष्टि से देखा जाएगा। भारतीयों के लिए जिन्हे इस पद्धति के माध्यम सें स्वतंत्रता प्राप्त करने का सौभागय प्राप्त हुआ है आचार्य विनोबा के सिद्धांतो को अपनाना कठिन नही होगा क्योकि ये मूलतः महात्मा गांधी द्वारा सुझाये गए मार्ग का ही विस्तृत रूप है। '' सर्वोदय के माध्यम से स्थापित नई सामाजिक व्यवस्था में करोड़ो लोगों की सामाजिक और आर्थिक अधिकारो की प्राप्ति करने के उद्देश्य से जयप्रकाश नारायण नें कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

- जन संख्या के कमजोड़ वर्ग के लिए जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की प्रावधान करना।
- आवश्यक वस्तुओ की कीमतों को उसके उत्पादन में आए खर्च से जोड़ना तथा कृषि और उधोगो के बीच बुद्धिसंगत संतुलन स्थापित करना जिससे वस्तुओं के मूल्यों कों नियंत्रित किया जासके।
- आर्थिक असमानताओ को न्यूनतम स्तर पर ले जाना जिससे वे 1:10 की बुद्धिसंगत सीता के अन्तर्गत रह सके।
- भूमि–सुधार कार्यक्रम को जमीन के समान पुनर्वितरण द्वारा प्रभाव में लाना तथा कृषि श्रमिको को उचित तकनिक द्वारा कृषि श्रमिको को उचित तकनीक द्वारा कृषि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देना।
- औधौगिकीकरण के कार्यक्रम ऐसे तकनीको पर आधारित होने चाहिए जिसमे मानव–शक्ति का भरपूर प्रयोग हो।
- राष्ट्रीय बचत का एक कार्यक्रम विलासिता की वस्तुओं के आयात तथा देश में उनके उत्पादन पर रोक लगाकर चलाय जाए।
- राष्ट्रीय आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षा की गुणवत्त में सुधार तथा उसे प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया जाए।
- माध्यमिक स्तर से शिक्षा को व्यावसायिक बनाना तथा ऐसी आर्थिक योजनाओ को अपनाना जिससे रोजगार की संभवनाएँ बढ़े।
- पांच वर्षो में सर्वव्यापी प्राथमिक शिक्षा तथा सर्वव्यापी बयस्क शिक्षा योजनाओं को सफल बनाना।
- शैक्षणिक संस्थाओं में सरकारी दखल पर रोक लगाना तथा इन संस्थानों का संचालन एंव व्यवस्थापन उनके शिक्षको एंव छात्रों के कंधे पर होना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. जयप्रकाश नारायण, टूवार्ड टोटल रेव्युलेशन, वाल्युम–2 पॉपलुर प्रकाशन, बॉम्बे, 1978, पृ0 45
2. जयप्रकाश नारयण, फ्रॉम सोशियलिज्म टू सर्वोदय, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी, 1957, पृ 110
3. जी0 एस0 भारगवा, जे0 पी0 जेल लाइफ ए कलेक्शन ऑफ पर्सनल लेटर्स), ऑरनोल्ड– हेडनमेन, नई दिल्ली 1977, पृ0 70
4. जयप्रकाश नारायण मैने जनशक्ति द्वारा हर सामाजिक परिवर्त्तन वे निर्माण का सपना देखा, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 8मई, 1977 पृ0 40
5. जयप्रकाश नारायण, कारावास की कहानी, सर्व सेवा प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, पृ0 93–94.
6. आचार्य राममूर्ति, रामप्रवेश शास्त्री की संपूर्ण क्रांति पुस्तक के विमाचन समारोह में सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–221001, पृ0 8
7. जयप्रकाश नारायण, संपूर्ण क्रांति, सर्व प्रकाशन, राजघाट वाराणसी, पृ0 59–60
8. आर0 के0 श्रीवास्तव, सर्वोदयः विजन एण्ड रियलिटी, रामाश्रय, संपादक, पूर्वोद्धत, पृ0 290
9. जयप्रकाश नारायण, टूवार्ड टोटल रेव्युलेशन, वाल्युम–2 पॉपलर प्रकाशन, बॉम्बे, 1978, पृ0 102
10. जयप्रकाश नारायण, फॉम सोशियलिज्म टू सर्वोदय, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी 1957, पृ0 111
11. जी0 एस0 भारगवा, जे0 पी0 जेल लाइफ (ए कलेक्शन ऑफ पर्सनल लेटर्स) ऑरनोल्ड– हेडनमेन, नई दिल्ली 1977, पृ0 132
12. रामाश्रय राय, परम्परा का नवीकरण, एवं लोकैशण, सर्वोदय और स्वाध्यायः भारतीय परंपरा का नवीकरण, शिक्षा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृष्ठ–130
13. बिमल प्रसाद, कॉन्सेप्ट ऑफ टोटल रेव्युलेशनः एन इन्ट्रोडक्टरी एसे (जेपी एंड सोशल चेन्ज), ऑक्सफोर्ड, नई दिल्ली, 1982, पृ0 85
14. ब्रहमानन्द, नेशन बिल्डिंग इन ईंडिया– जे0 पी0 नारायण, नवचेतना प्रकाशन, वाराणसी, 1974, पृ0 74
15. एलेन एंड वेडी स्कारफी, जे0 पी0: हिज बायोग्रफी, ओरियन्ट लॉन्गमैन, नई दिल्ली, 1975, पृ0 70।